Haryana Government Gazette

Published by Authority

© Government of Haryana

No. 12–2024] CHANDIGARH, TUESDAY, MARCH 19, 2024 (PHALGUNA 29, 1945 SAKA)

PART-I

Notifications, Orders and Declarations by Haryana Government

हरियाणा सरकार

विरासत तथा पर्यटन विभाग

अधिसूचना

दिनांक 12 मार्च, 2024

संख्या 12/249–2021–पुरा/926–33.— चूंकि, हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि नीचे दी गई अनुसूची के खाना 1 में विनिर्दिष्ट पुरातत्वीय स्थलों तथा अवशेषों और प्राचीन तथा ऐतिहासिक संस्मारकों का हरियाणा प्राचीन तथा ऐतिहासिक संस्मारक तथा पुरातत्वीय स्थल तथा अवशेष अधिनियम, 1964 (1964 का पंजाब अधिनियम 20) के अधीन संरक्षण अपेक्षित है।

इसलिए, अब, हरियाणा प्राचीन तथा ऐतिहासिक संस्मारक तथा पुरातत्वीय स्थल तथा अवशेष अधिनियम, 1964 (1964 का पंजाब अधिनियम 20) की धारा 4 की उपधारा (1) के अधीन प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल, इसके द्वारा, नीचे दी गई अनुसूची के खाना 1 में विनिर्दिष्ट प्राचीन तथा ऐतिहासिक संस्मारकों को संरक्षित संस्मारक के रूप में तथा उक्त अनुसूची के खाना 1, 2, 3, 4, 5, 6 तथा 7 में विनिर्दिष्ट पुरातत्वीय स्थलों और अवशेषों को संरक्षित क्षेत्र के रूप में घोषित करने का प्रस्ताव करते हैं।

इसके द्वारा, नोटिस दिया जाता है कि इस अधिसूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तिथि से दो मास की अवधि की समाप्ति पर या उसके पश्चात् सरकार, ऐसे आक्षेपों या सुझावों, यदि कोई हो, के साथ, जो प्रधान सचिव, हरियाणा सरकार, विरासत तथा पर्यटन विभाग, चण्डीगढ़ द्वारा प्रस्ताव के सम्बन्ध में किसी व्यक्ति से इस प्रकार विर्निर्दिष्ट अवधि की समाप्ति से पूर्व प्राप्त किए जाएं, पर विचार करेगी।

अनुसूची

प्राचीन तथा ऐतिहासिक संस्मारक का नाम	पुरातत्वीय स्थलों तथा अवशेष का नाम	गांव/शहर का नाम	तहसील/जिला का नाम	संरक्षणाधीन राजस्व खसरा/किला संख्या	संरक्षित किया जाने वाला क्षेत्र कनाल–मरला	स्वामित्व	विशेष कथन
1	2	3	4	5	6	7	8
मध्ययुगीन मकबरा	मध्ययुगीन मकबरा	अमरपुर	पलवल	278/323–38	2 कनाल 4 मरला	ग्राम पंचायत	अमरपुर गांव में एक परित्यक्त छोटा मध्ययुगीन मकबरा (18वीं–19वीं शताब्दी ईस्वी के अंत में) स्थित है। यह संरचना एक वर्गाकार योजना पर, एक ऊँचे चबूतरे पर खड़ी है, जिसमें बारह स्तंभों द्वारा समर्थित एक अर्धगोलाकार गुंबद है और इसके सभी तरफ सुन्दर घुमावदार 12 कोष्ठक हैं और इस प्रकार इसमें बारह प्रवेश द्वार हैं। यह मकबरा राजपूत, पठान, मुगल वास्तुकला को आत्मसात करने वाली शैली में अद्वितीय है। मकबरे का निर्माण मलबे के कोर से किया गया था और फिर उसे लाखौरी ईंटों और लाल बलुआ पत्थर से ज्यामितीय और पुष्प डिजाइनों से सजाया गया था।

प्राचीन तथा ऐतिहासिक संस्मारक का नाम	पुरातत्वीय स्थलों तथा अवशेष का नाम	गांव/शहर का नाम	तहसील/जिला का नाम	संरक्षणाधीन राजस्व खसरा/किला संख्या	संरक्षित किया जाने वाला क्षेत्र कनाल–मरला	स्वामित्व	विशेष कथन
1	2	3	4	5	6	7	8
							गुंबद और उसका आधार, यहां तक कि चबूतरा भी लाखौरी ईटं की वास्तुकला है। स्तंभ, कॉर्बल्स, एंटेब्लेचर और छत लाल बलुआ पत्थर से बने हैं। इसमें अष्टकोणीय ड्रम–आधार पर कमल के पंख वाला बल्बनुमा गुंबद है। इसके प्रत्येक बाहरी भाग को तीन धंसे हुए मेहराबों में विभाजित किया गया है, जिसमें कंगनी पर एक चालू ब्रैकेट है। यह इंडो–इस्लामिक वास्तुकला के अद्भुत और विकास का उदाहरण है। इस इंडो–इस्लामिक वास्तुकला ने संरचनाओं की सौंदर्य विरासत को प्रकट किया। कुछ तकनीकें और अलंकरण प्रचलित और लोकप्रिय थे, जैसे गुंबद को सहारा देने के लिए कोष्ठक, स्तंभ और लिंटेल। प्रारंभिक जांच से यह 18वीं–19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध का प्रतीत होता है। यह गुंबद के साथ एक कब्र जैसा दिखता है। तथापि, उक्त ढांचे के पास एक कब्र बनी हुई है, जो ज्यादा पुरानी नहीं है।

एम०डी० सिन्हा,
प्रधान सचिव, हरियाणा सरकार,
विरासत तथा पर्यटन विभाग।

HARYANA GOVERNMENT

HERITAGE AND TOURISM DEPARTMENT

Notification

The 12th March, 2024

No. 12/249/2021-Pura/ 926-33.— Whereas the Governor of Haryana is of the opinion that archaeological sites and remains, ancient and historical monuments specified in column 1 of the Schedule given below requires protection under the Haryana Ancient and Historical Monuments and Archaeological Sites and Remains Act, 1964 (Punjab Act 20 of 1964);

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (1) of section 4 of the Haryana Ancient and Historical Monuments and Archaeological Sites and Remains Act, 1964 (Punjab Act 20 of 1964) the Governor of Haryana hereby proposes to declare the ancient and historical monuments specified in column 1 of Schedule given below, to be a protected archaeological site and remains as specified in columns 1, 2, 3, 4, 5, 6 and 7 of the said Schedule.

Notice is hereby given that the proposal shall be taken into consideration by the Government on or after the expiry of a period of two months from the date of publication of this notification in the Official Gazette, together with objections or suggestions, if any, from any person with respect to the proposal which may be received by the Principal Secretary to Government, Haryana, Heritage and Tourism Department, Chandigarh before the expiry of the period so specified:-

SCHEDULE

Name of ancient and historical monuments	Name of archaeological sites and remains	Name of village/ city	Name of tehsil / district	Revenue Khasra/ Kila number under protection	Area to be protected Kanal-Marla	Ownership	Remarks
1	2	3	4	5	6	7	8
Medieval Tomb	Medieval Tomb	Amarpur	Palwal	278/323-38	2 Kanal 4 Marla	Gram Panchayat	An abandoned small medieval tomb (late 18th-19th Century CE) is located in Amarpur village. The structure is standing on square plan, on a high plinth with a hemispherical dome supported by twelve pillars and has beautiful curved 12 brackets in all the sides and thus has twelve entrances. The tomb is unique in style showing the assimilation of Rajput, Pathan,

Name of ancient and historical monuments	Name of archaeological sites and remains	Name of village/ city	Name of tehsil / district	Revenue Khasra/ Kila number under protection	Area to be protected Kanal-Marla	Ownership	Remarks
1	2	3	4	5	6	7	8
							Mughal architecture. The tomb was constructed with a rubble core and then dressed with lakhori brick and red sandstone with geometric and floral designs. The dome and its base, even the plinth, are lakhori brick architecture. The pillars, corbels, entablature and roof are made of red sandstone. It has bulbous dome with a lotus finial resting on an octagonal drum-base. Each of its entrances outside is divided into three recessed arches, with a running bracket-at the cornice. It is a classic example of the evolution and development of Indo-Islamic Architecture with the use of embellishments such as brackets, pillars and lintels to support the dome. From initial examination this seems to be of the late 18th-19th century. It looks like a cenotaph with a dome but there is no grave under it. However, There is a grave near the said structure which is of a later period.

M.D. SINHA,
Principal Secretary to Government, Haryana,
Heritage and Tourism Department.

10944—C.S.—H.G.P., Pkl.